# लिंगाष्टकम्

ब्रह्म मुरारि सुरार्चित लिंगं निर्मल भासित शोभित लिंगम् ।
जन्मज दुःख विनाशक लिंगं तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥ 1 ॥

देवमुनि प्रवरार्चित लिंगं काम दहन करुणाकर लिंगम् ।
रावण दर्प विनाशन लिंगं तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥ 2 ॥

सर्व सुगंध सुलेपित लिंगं बुध्धि विवर्धन कारण लिंगम् ।
सिध्ध सुरासुर वंदित लिंगं तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥ 3 ॥

कनक महामणि भूषित लिंगं फणिपति वेष्टित शोभित लिंगम् ।
दक्ष सुयज्ञ विनाशन लिंगं तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥ 4 ॥

कुंकुम चंदन लेपित लिंगं पंकज हार सुशोभित लिंगम् ।
संचित पाप विनाशन लिंगं तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥ 5 ॥

देव गणार्चित सेवित लिंगं भावै-र्भक्तिभिरेव च लिंगम् ।
दिनकर कोटि प्रभाकर लिंगं तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥ 6 ॥

अष्टदळो परिवेष्टित लिंगं सर्व समुद्भव कारण लिंगम् ।
अष्टदरिद्र विनाशन लिंगं तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥ 7 ॥

सुरगुरु सुरवर पूजित लिंगं सुरवन पुष्प सदार्चित लिंगम् ।
परात्परं परमात्मक लिंगं तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥ 8 ॥

लिंगाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेश्शिव सन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥

अंतिमधाम
www.antimdham.com
+91-846-0000-648